स्वतंत्रता आंदोलन और स्त्री रचनाकार

निशा कुमारी

(शोधार्थी)

हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर दरभंगा

शोध सार :–

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने न केवल प्रत्यक्ष संघर्ष करके बल्कि साहित्य के माध्यम से राष्ट्रवाद के अलख जागायी है। स्त्री रचनाकारों ने साहित्य के माध्यम से राष्ट्रप्रेम, बलिदान और सामाजिक सुधार का ओजस्वी स्वर बुलंद करके क्रांति का शंखनाद करते हुए आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। उनकी रचनाओं में अंग्रेजों के शोषण, दमन और अत्याचार के खिलाफ विद्रोह और क्रांति का स्वर है जो स्वतंत्रता संग्राम के समय बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुआ। सुभद्रा कुमारी चौहान, सरोजिनी नायडू, अरुण आसिफ अली, सावित्रीबाई फुले, मैडम भीकाजी कामा, बंग महिला, उषा मेहता और दुर्गाबाई देशमुख आदि रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीयों में जन-चेतना जागृत की है। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष की नई दिशा दिखाई है और राष्ट्रीय भावना को उजागर किया है। उन्होंने अपनी कविताओं, कहानियों, लेखों के द्वारा देश की एकता अखंडता की बात की है। उनकी रचनाएं अंग्रेजों के शोषणकारी और दमनकारी नीतियों के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देती है।

सरोजिनी नायडू एक प्रमुख राष्ट्रवादी और ओजस्वी वक्ता के रूप में नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय महिला संघ की स्थापना करके महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। इस संघर्ष में मैडम भीकाजी कामा का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा है। मैडम भीकाजी कामा स्वतंत्रता संग्राम की एक प्रमुख नेतृत्वकर्ता और क्रांतिकारी स्त्री के रूप में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत की स्वतंत्रता और समानता की मांग की। 'वंदे मातरम' और 'मदन की तलवार' जैसी अखबारों को निकाल कर ब्रिटिश शासन के खिलाफ आवाज उठाई और राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया। अरुण आसिफ अली ने अपनी बहादुरी और नेतृत्व क्षमता से भारतीय संग्राम स्वतंत्रता में एक अमिट छाप छोड़ी । खासकर भारत छोड़ो आंदोलन में उनकी भूमिका अविस्मरणीय है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सावित्रीबाई फुले की भूमिका भी अग्रणी रही है उन्होंने शिक्षा, अधिकार और सामाजिक सुधारो के माध्यम से समाज को सशक्त किया है। उन्होंने 1848ई. में भारत की पहली बालिका विद्यालय खोलकर दलित महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान केंद्रित कर उसमें चेतना जगाई । 1873 ई.में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना करके सामाजिक समानता और जातिगत भेदभाव को मिटाने का काम किया। उन्होंने 'काव्य फूल' पुस्तक की रचना करके शिक्षा के महत्व पर जोर दिया। जिसमें महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों की बात करके उन्हें राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन के मुख्यधारा में लाने का कार्य किया।

'झांसी की रानी' जैसी कविताओं की रचना करने वाली कवियित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने गांधी जी के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। इस आंदोलन के दौरान उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। एक और उनमें जहां नारी -सुलभ गणों का उत्कर्ष है तो वहीं दूसरी ओर स्वदेश प्रेम , त्याग और बलिदान और की भावना है जो एक क्षत्रिय नारी में होना चाहिए। उन्होंने 'झांसी की रानी', 'जलियांवाला बाग में बसंत', 'वीरों का कैसा हो

© Copyright @ Authors

बसंत', 'झांसी की रानी की समाधि पर' जैसी कविताओं के माध्यम से भारतीय युवाओं और महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने एक ओर 'झांसी की रानी' जैसी कविताएं लिखकर महिलाओं के भीतर वीरता का संदेश दिया है तो वहीं दूसरी और 'वीरों का कैसा हो बसंत' कविता में देशभक्ति के मार्ग पर अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर सेनानियों का स्मरण किया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी रचनाओं के माध्यम से केवल स्त्रियों को ही नहीं अपितु तो बुढ़े,बच्चे, जवान सभी के लिए कविताएं लिखी। उनके काव्य को एक को हम परिवारिकता से अलग नहीं कर सकते। इस परिवारिकता ने उनके काव्य में एक विशेष प्रकार की मधुरता और पूर्णता का गुण उत्पन्न किया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान के बाद उनके बचपन की सहेली महादेवी वर्मा की रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना सूक्ष्म और प्रतीकात्मक रूप में विद्यमान है जो सीधे रूप से प्रकट न होकर त्याग और बलिदान का संदेश देती है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से स्वतंत्रता के लिए निरंतर संघर्ष व वेदना के जरिए सामाजिक अन्याय के प्रति विद्रोह की भावना व्यक्त की है। 'दीपशिखा'और 'निहार' जैसी रचनाओं में महादेवी जी ने दीप को प्रतीक बनाकर भारतीय स्वतंत्रता के लिए जलते रहने और बाधाओं से न डरने के प्रेरणा देती है।

इस प्रकार इन लेखिकाओं ने अपनी कलम के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में वैचारिक क्रांति लायी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका को पुनर्जीवित किया है।

कूट शब्द :- स्वतंत्रता, राष्ट्रवाद, आंदोलन, सत्याग्रह, प्रेम ,बलिदान, समर्पण, चेतना, अन्याय, विद्रोह, जातिवाद, स्त्री, सामानता, शिक्षा, अधिकार।

भूमिका:-

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल प्रत्यक्ष संघर्ष में बल्कि साहित्य के माध्यम से भी राष्ट्रवाद की अलख जागाई है। स्वतंत्रता आंदोलन में महिला नेतृत्वकर्ताओं और रचनाकारों ने राष्ट्रप्रेम, बलिदान और सामाजिक सुधार का ओजस्वी स्वर बुलंद किया। स्त्री रचनाकारों ने केवल घर की चारदिवारी तक सीमित न रहकर राष्ट्र के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को समझकर इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी रचनाओं में अत्याचार के खिलाफ विद्रोह, राष्ट्र के प्रति प्रेम और क्रांति का स्वर है, जो स्वतंत्रता आंदोलन के समय बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुआ। सुभद्रा कुमारी चौहान, सरोजिनी नायडू, अरुण आसिफ अली, सावित्रीबाई फुले, महादेवी वर्मा, मैडम भीकाजी कामा, बंग महिला, उषा मेहता जैसी नेतृत्वकर्ताओं और कवित्रियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जन चेतना जगाई। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्त्री रचनाकार ने अपनी लेखनी से ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष को नई दिशा और राष्ट्र प्रेम की भावना को प्रमुखता प्रदान की है। उन्होंने अपनी कविताओं लेखों और कहानियों के माध्यम से देशवासियों में देशप्रेम, साहस, त्याग और बलिदान की भावना को जागृत किया। उनकी रचनाएं अन्याय के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देती है।

प्रमुख स्त्री रचनाकार और उनके योगदान :-

सरोजिनी नायडू:- सरोजिनी नायडू स्वतंत्रता आंदोलन में एक प्रमुख राष्ट्रवादी नेता, ओजस्वी वक्ता और गांधी जी के करीबी सहयोगी के रूप में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। वह 1925 में कांग्रेस की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष बनी। उन्होंने नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई तथा महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। 1917 में उन्होंने महिला भारतीय संघ (वूमेंस इंडियन एसोसिएशन) की स्थापना में अपना योगदान दिया।

© Copyright @ Authors

अपनी साहित्यिक प्रतिभा के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रवाद की भावना जागृत की है उन्होंने केवल भाषण भाषणों से बल्कि अपनी कविताओं जैसे (The Gift of india) से भारतीयों को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का मुद्दा उठाया।

मैडम भीकाजी कामा :- भीकाजी कामा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक प्रमुख नेतृत्वकर्ता और क्रांतिकारी स्त्री थी जिन्हें 'क्रांति की जननी' कहा जाता है। उन्होंने 1960ई. में जर्मनी के 'स्टेटगार्ड' में पहली बार विदेशी धरती पर भारतीय झंडा फहराकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की स्वतंत्रता संग्राम की मांग को बुलंद किया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत के अकाल और दमनकारी नीतियों को उजागर कर स्वतंत्रता और समानता की मांग की। उन्होंने 'वंदे मातरम' और 'मदन की तलवार' जैसे अखबारों से ब्रिटिश शासन के खिलाफ आवाज उठाई और राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया। पुणे में साम्राज्यवाद के खिलाफ विश्व जनमत तैयार करने और उपनिवेशवाद का विरोध करने वाले से समर्थकों के लिए अथक प्रयास किया। वह महिला शिक्षा और समाज व राजनीति में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का प्रबल समर्थक रही। मैडम भीकाजी कामा विदेश में रहकर भारतीय स्वतंत्रता की मशाल जलाई और उसे विश्व भर में फैलाया।।

अरुणा आसफ अली :- अरुणा आसफ अली ने स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाई। 1930 में उन्होंने नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया और गिरफ्तार हुई। उन्होंने 1942 में मुंबई के 'ग्वालियर टैंक मैदान' पर तिरंगा फहराकर ब्रिटिश हुकूमत को चुनौती दी। 1942 के बाद वह भूमिगत होकर अपने साथियों के साथ मिलकर ब्रिटिश शासन के खिलाफ आंदोलन किया। जिसे अंग्रेजों को काफी मुश्किल का सामना करना पड़ा। वह एक निडर और क्रांतिकारी शिक्षिका थी जिन्हें भारतीय स्वतंत्रता की 'ग्रैंड ओल्ड लेडी' कहा जाता है। अरुण आसिफ अली ने अपनी बहादुरी और नेतृत्व क्षमता से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक अमिट छाप छोड़ी। खासकर भारत छोड़ो आंदोलन में उनकी भूमिका अविस्मरणीय है।

सावित्रीबाई फुले :- सावित्रीबाई फुले स्वतंत्रता आंदोलन में ब्रिटिश राज के दौरान शिक्षा खासकर महिला शिक्षा अधिकार और सामाजिक सुधारों (जातिवाद, अस्पृश्यता,बाल विवाह का विरोध) के माध्यम से समाज को सशक्त किया। उन्होंने 1848 में भारत का पहला बालिका विद्यालय खोलकर बाल विवाह, सती प्रथा, छुआछूत का विरोध कर तथा विधवाओं की सशक्तिकरण पर जोर देकर सामाजिक गुलामी के खिलाफ संघर्ष किया। जो आजादी की लड़ाई की एक अहम हिस्सा था। उन्होंने समाज के सबसे वंचित वर्ग विशेषकर दलित महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान केंद्रित कर उसमें चेतना जागायी। 1873 ई में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिसका उद्देश्य सामाजिक समानता लाना और जातिगत भेदभाव को मिटाना था। उनका काम न केवल राजनीतिक आजादी तक सीमित था बल्कि उन्होंने सामाजिक गुलामी से मुक्ति के लिए संघर्ष किया

अपने साहित्यिक प्रतिभा के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रवाद की भावना को जागृत किया। उनकी कविता 'काव्य फूल' 1854 में शिक्षा के महत्व पर जोर दिया। जिसमें उन्होंने कहा कि शिक्षा के बिना स्त्री बिना जड़ और पतियों वाले बरगद के पेड़ के समान है। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा और अधिकारों के माध्यम से सशक्त बनाकर उन्हें राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन के मुख्यधारा में लाने का कार्य किया। जो व्यापक स्वतंत्रता आंदोलन का अभिन्न अंग था। सावित्रीबाई फुले शिक्षा और समाज सुधार के माध्यम से ब्रिटिश गुलामी के दौर में भारत में एक नई सामाजिक चेतना और समानता की नवीन साखी जो स्वतंत्रता संग्राम का हीं एक महत्वपूर्ण पहलू था।

सुभद्रा कुमारी चौहान :- राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी और बाल कृष्णा शर्मा 'नवीन' की परंपरा में बड़े सम्मान के साथ सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम लिया जाता है। बीसवीं सदी की

© Copyright @ Authors

सर्वाधिक यशस्वी कवित्रियों में सुभद्रा कुमारी चौहान का प्रमुख योगदान रहा है। अपने जीवन काल में में सुप्रसिद्ध कवियित्रि होने के साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने 1921ई. इसमें गांधी जी के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रुप से भाग लिया और नागपुर में गिरफ्तार होने वाली पहली महिला सत्याग्रही बनी। 1922 ई. में जबलपुर में हुए देश के पहला झंडा सत्याग्रह का नेतृत्व किया। जहां उन्होंने राष्ट्रीय झंडा फहराने के लिए प्रदर्शन की और अपनी वाणी से लोगों को प्रेरित किया। ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रदर्शनों में हिस्सा लेने के कारण उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। इस संबंध में मुक्तिबोध का मानना है कि "सुभद्रा कुमारी चौहान नारी के रूप में रहकर साधारण नारियों के आकांक्षाओं और भावों को व्यक्त करती है। बहन, माता, पत्नी, के साथ-साथ एक सच्ची देश सेविका के भाव को व्यक्त करती हैं। उनकी शैली में वही सरलता है, वही आकृत्रिमता और स्पष्टता है जो उनके जीवन में है। उनमें एक ओर जहां नारी-सुलभ गुणों का उत्कर्ष है, तो वहीं दूसरी ओर स्वदेश प्रेम और देशाभियान भी है जो एक क्षत्रिय नारी में होना चाहिए।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक चेतना का प्रचार-प्रसार किया। उनके लेखन का अधिकांश भाग स्वतंत्र और मुक्ति को समर्पित हैं। उनके लेखन में महिलाओं और युवाओं को स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया है। उस समय भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति समिति नहीं थी लेकिन सुभद्रा कुमारी ने रुढ़िवादी को तोड़ते हुए समाज में महिलाओं को प्रोत्साहित किया। उनकी कविताओं में नारीवादी शक्ति और साहस का चित्रण मिलता है, जिससे महिलाओं में आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की भावना जागृत होती है। उन्होंने 'झांसी की रानी', 'झांसी की रानी की समाधि पर', 'वीरों का कैसा हो बसंत', 'जलियांवाला बाग में बसंत' कविताओं के माध्यम से अपने राष्ट्र के प्रति साहस, प्रेम, त्याग, और समर्पण को उजागर किया है। उन्होंने अपना सर्वस्व देश के प्रति ने न्योछावर कर दिया। 'झांसी की रानी' जैसी कविताओं में महिलाओं के भीतर वीरता का संदेश दिया और उन्हें रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना बनने के लिए प्रेरित किया। ऐसे वीरांगना की कहानी हमारे भारतीय समाज की स्त्रियों को अपने देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए अपना आत्म बलिदान देने के लिए प्रेरित करती हैं। कवयित्री का मानना है कि देश की आजादी के लिए स्त्रियां भी देश के वीर जवानों के साथ संघर्ष करें। 'झांसी की रानी' कविता के माध्यम से कवियित्री ने देश की स्त्रियों का आह्वान करते हुए उन्हें प्रोत्साहित करते हुए कहती है-

"सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी'।"[2]

इस कविता के माध्यम से सुभद्रा जी ने भारतवासियों को महारानी लक्ष्मीबाई की वीरता एवं शौर्य की याद दिलाई है कि वह किस तरह अकेली महरानी लक्ष्मीबाई ने फिरंगियों के छक्के छुड़ा दिए। भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाली रानी लक्ष्मीबाई की कुर्बानी को हमारा देश आज भी उन्हें सम्मान के साथ याद करता है।

© Copyright @ Authors

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय भावधारा की कवयित्री है। देश की गुलामी ने उन्हें हिला कर रख दिया। देशभक्ति के मार्ग पर अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर सेनानियों के स्मृतियां बार-बार उन्हें झकझोरती है। जलियांवाला बाग के नृशंस हत्याकांड से उसके मन पर घर आघात लगा। इस घटना से प्रभावित होकर उन्होंने 'जलियांवाला बाग में बसंत' कविता लिखी। जिसमें उन्होंने लिखा है -

"परिमलहीन पराग दाग-सा बना पड़ा है
हा ! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।
आओ प्रिय ऋतुराज? किंतु धीरे से आना
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।
कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।"[3]

'झांसी की रानी की समाधि पर' नामक कविता में उन्होंने पहले भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अरमान वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान पर श्रद्धा के पुष्प अर्पित किए हैं और उनकी समाधि में छपी उनकी राख की ढेरी में भारत की आजादी की चिंगारी को देखा है। इस कविता में उन्होंने लिखा है-

"इस समाधि में छिपी हुई है, एक राख की ढेरी।
जल कर जिसने स्वतंत्रता की, दिव्य आरती फेरी।
यह समाधि यह लघु समाधि है, झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की।"[4]

सुभद्रा कुमारी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से केवल स्त्रियों को ही नहीं अपितु उन्होंने बच्चे, बूढ़े, जवान सभी के लिए राष्ट्रीय कविताएं लिखी हैं। उनके साहित्य के संबंध में सुमन राज्य का मानना है कि- "सुभद्रा जितनी बड़ी साहित्य-योद्धा थी उससे अधिक बड़ी स्वातंत्र्य योद्धा थी। उनका जीवन देश के लिए त्याग की अप्रतिम कथा है। साहित्य-सृजन में उन्होंने बच्चों से लगाकर बड़ों और वृद्धों तक के लिए राष्ट्रीय कविताएं रची और राष्ट्रीय कविताएं रचने के संकल्प में उन्हें जहां जो उपकरण उपलब्ध हुआ, उसका भरपूर उपयोग किया। जीवन और कविता दोनों को ही उन्होंने समग्रता में जिया। स्त्री के सभी रूप बालिका, प्रेमिका, पत्नी, बहन और मां, उनके जीवन में भी और कविता में भी दिखायी देते है। पूरे वैभव और संवेदना के साथ उतरे हैं। सभी में सूत्र बदला राष्ट्रीय भावना की है। जीवन और कविता की ऐसी पारस्परिकता बहुत कम देखी जाती है। वे अपनी कविताएं जीवन की तरह जीते हैं और जीवन कविता की तरह लिखती हैं।"[5] सुभद्रा जी की राष्ट्रीय कविताओं में सरसता एवं सरलता उनकी पारिवारिक जीवन से संबंध रखने वाली रचनाओं में भी मिलती है। उनके काव्य को हम परिवारिकता से अलग नहीं कर सकते। इस परिवारिकता ने उनके काव्य में एक विशेष प्रकार की मधुरता और पूर्णता का गुण उत्पन्न किया है।

राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी और अनवरत जेल यात्रा के बावजूद उनके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हुई- बिखरे मोती, उन्मादनी, सीधे-साधे चित्र। वह स्वतंत्रता नहीं स्वराज चाहती है। परतंत्रता नहीं स्वनुशासन चाहती है। रुढ़ियों, बंधनों से मुक्त होकर वह स्वनियंत्रण में रहना चाहती हैं। सुभद्रा जी के सभी कहानियों को हम एक तरह से सत्याग्राही कहानी कह

© Copyright @ Authors

सकते हैं। उनकी स्त्रियां सत्याग्रही स्त्रियां हैं। 'राही' कहानी की अनीता भी एक सत्याग्रही महिला है जो देश में फैली अशिक्षा, गरीबी, भूखमरी और अज्ञानता को मिटाने काम करती है। कहानी की पात्र अनीता एक सत्याग्रही महिला है, जो जेल में रहकर गरीबी, भूखमरी जैसी समस्या को दूर कर सबको रोजगार दिलाने कि बात करती है। कहानी में 'मंगरोरी' जाति 'राही' है, जिसे मांगने के बाद में कुछ नहीं मिलता तो वह अपना पेट भरने के लिए अनाज चोरी कर लेती है जिसके जुर्म में उसे जेल की सजा काटनी पड़ती है। उसके पति को भी शराब पीने के जुर्म में जेल में डाल दिया जाता है। हमारे देश की कितनी बड़ी विडंबना है कि अपराधियों को सजा नहीं मिलकर निरपराध को सजा सुनाई जाती है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने कहानी में अनीता के माध्यम से देश में फैली इस अराजकता को दूर करने का काम किया।

सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है। उन्होंने अपनी काव्य में राष्ट्र को केंद्र में रखा और राष्ट्र के प्रति अपने प्रेम, निष्ठा और समर्पण को व्यक्त किया है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से देश की जनता को जागरूक करने का प्रयास किया है। देश की स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने कई बार जेल की यात्रा भी की किन्तु इस घटना का उनके मन पर कोई गहरा प्रभाव नहीं पड़ा। उनका मन सदैव देश के प्रति समर्पित रहा। राष्ट्रीय काव्य धारा की महिला कवियित्री होने के साथ समाज में फैली अराजकत को भी दूर करने का प्रयास किया। उनकी कविताएं आज उतना ही प्रासंगिक है जिसे पढ़कर मन प्रोत्साहित होकर अपने राष्ट्र के प्रति जागरुकता की भावना को बढ़ावा देता है।

महादेवी वर्मा :- महादेवी वर्मा की रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना सूक्ष्म और प्रतीकात्मक रूप में विद्यमान है जो सीधे युद्ध या नारे न लगाकर जागरण, त्याग और बलिदान का संदेश देती है। उनकी रचनाओं में सामाजिक अन्याय के प्रति विद्रोह की भावना व्यक्त हुई है जो देश प्रेम को दर्शाता है। महादेव जी ने केवल भौगोलिक स्वतंत्रता नहीं बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक दासता से मुक्ति पर जोड़ दिया है। उन्होंने भारतीयों को अपने गौरवशाली अतीत से जुड़ने और आत्मनिर्भर होने के लिए प्रोत्साहित किया है। उनके काव्य में निहित पीड़ा का अर्थ केवल व्यक्तिगत दुख नहीं बल्कि राष्ट्र की दुर्दशा से उत्पन्न वेदना है जो देश के लिए व्यक्तिगत सुखों को त्यागने की प्रेरणा देता है। 'दीपशिखा', 'निहार' जैसी रचनाओं में महादेवी जी ने 'दीप' को प्रतीक बनाकर भारतीयों को स्वतंत्रता के लिए जलते रहने और बाधाओं से न डरने के लिए प्रेरित किया है। 'बांध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन संजीले' कविता की पंक्तियां में देशवासियों को सांसारिक मोह त्यागकर राष्ट्र सेवा में जुटने का आवाहन करती है जो राष्ट्रप्रेम को स्पष्ट करता है।

इस प्रकार महिलाओं स्वतंत्रता संग्राम में अपनी कलम से राष्ट्रवाद और सामाजिक चेतना को जगाकर इस लड़ाई को नई दिशा दी है। उन्होंने केवल दर्शक बनकर नहीं बल्कि सक्रिय रूप से भाग लेकर सत्याग्रह, प्रदर्शन और भूमिगत कार्यों और साहित्य के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्त्री रचनाकारों ने अपनी लेखनी से जनमानस को प्रेरित किया। देश की आजादी के संघर्ष में कुछ महिलाओं ने अपने कंधों पर बंदूक रखकर तो वहीं कुछ महिलाओं ने तिरंगा और कुछ ने चरखा को अपनाकर स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका निभा कर भारतीय इतिहास के पन्नों में अपने स्वर्णिम संघर्ष को अमर कर अमित छाप छोड़ गई।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मुक्तिबोध रचनावली भाग- 5, नेमीचंद्र जैन (संपादक) राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 370
2. 'झांसी की रानी' सुभद्रा कुमारी ग्रंथावली, पृष्ठ संख्या- 158
3. 'जलियांवाला बाग में बसंत' , सुभद्रा समग्र , हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या- 70

© Copyright @ Authors

4. 'झांसी की रानी की समाधि पर' सुभद्रा समग्र , हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या-146

5. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 252

© Copyright @ Authors